जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५५ वे ❖ अंक १२ वा ❖ ऑगस्ट २०२४ ❖ वीर संवत २५५० ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● मोक्ष मार्ग के २१ कदम : तप	१५	● तप व क्षमा का महापर्व पर्युषण	४९
● बने वीर धीर गंभीर	१९	● हास्य जागृती	५०
● चातुर्मास एक Semester है	२१	● बुध्दनिधान अभयकुमार	५९
● श्री रावण पार्श्वनाथ तीर्थ, अलवर	२३	● बिन जाने कित जाऊँ - प्रश्नोत्तर प्रवचन	६३
● छोटी सी बातें	२४	● जैन हा धर्म, जात पडताळणी प्रमाणपत्र दिले जाऊ शकत नाही - उच्च न्यायालय	६५
● कव्हर तपशील	२५	● आधुनिक युग में जैन श्रावकाचार	६६
● महान कौन	३१	● International Friendship Day	६८
● पुणे शहर चारो संप्रदाय ५४ चातुर्मास सूची	३५	● भारतातील महत्त्वाच्या प्रवेश परीक्षा	६९
● श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराज चातुर्मास सूची	३९	● मनोरंजन के खेल में छुपा मोक्ष प्राप्तिका संदेश	७१
● श्रमण संघीय महाराष्ट्र चातुर्मास सूची	४०	● ऐसी हुई जब गुरुकृपा - घूँट-घूँट में अमृत पी	७२
● मंत्राधिराज प्रवचन सार	४४	● धर्म विज्ञान : अनुसंधान	७५
● सम्मेतशिखर तीर्थ यात्रा - फरवरी २०२५	४५	● हम साध्य भूलकर साधनों में उलझ गये है	७६
● जीवन बोध : मनहुस कौन	४६	● निभाएँ तो निभाएँ कैसे ?	७६
● रत्न ही रत्न : मैं निहाल हो गया	४७		
● नफरत V/S प्यार	४८		

- सवाल में ही जबाब ७७
- सुर्यदत्त एक्सलन्स ॲवॉर्ड–२०२४ ८३
- सादडी निवासी संमेलन, पुणे ८४
- आर. एम. डी. स्कूल, पुणे – वृक्षारोपण ८५
- नामको हॉस्पिटल, नाशिक ८७
- श्री. चांदमलजी लुंकड, भोसरी जीवन गौरव पुरस्कार ८९
- फलौदी जैन संघ ८८
- धर्म के कॉलम में सिर्फ जैन लिखे ९१
- पासवर्ड ९३
- अर्न्तचेतना जगाने का उत्सव पर्युषण महापर्व ९५
- सुरक्षा : मुर्ख ही सुरक्षा नियमों का भंग करता है। ९७
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

	एक वर्ष	त्रिवार्षिक	पंचवार्षिक
साध्या पोस्टाने	५००	१३५०	२२००
रजिस्टर पोस्टाने	८००	२२५०	३७००

या अंकाची किंमत ५० रुपये. Google Pay - Mob. : 9822086997

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२–१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे–सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

बनें वीर-धीर-गंभीर

लेखक : आचार्यप्रवर श्री हीरचन्द्रजी म. सा.

अविनाशी-अविचलपदवासी सिद्ध भगवन्त, सर्वज्ञ-सर्वदर्शी, अरिहन्त भगवन्त तथा ज्ञान-दर्शन-चारित्र में रमण करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन !

बन्धुओं !

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में जीवन- निर्माण के कुछ सूत्रों का कथन किया जा रहा है। सूत्र में तीन शब्द हैं- वीर- धीर-गंभीर । व्यक्ति चारित्र लेने में वीर बनता है। जब तक जीवन में वीरता का संचार नहीं होता, तब तक व्रत-नियम और महाव्रत ग्रहण करने की भावना नहीं आती।

संसार में वीर अनेक हैं। हाथियों पर बैठने वाले हैं। शेर को नचाने वाले हैं। साँप का खेल दिखाने वाले हैं। परन्तु हिंसक दुर्दान्त पशुओं को जीतने के बजाय आत्मा में रही पाशविक प्रवृत्तियों को जीतना वीरता की निशानी है। आपने देखा होगा कि सपेरा साँप को नचाता है। सरकस में खेल दिखने वाला मास्टर, शेर के खेल को दिखाता है। शेर, चीता, भालू जैसे खूँखार जानवरों को वश में करने वाले है, उन्हें वीर नहीं कहते हैं। किन्तु जो विपरीत प्रवृत्तियाँ हैं उन्हें काबू में रखना वीरता है। मैं विषय को और थोड़ा स्पष्ट करूँ- शेर को नचाने वाले विकारों के आगे नाचने लग जाते हैं। दुर्दान्त-भयंकर हिंसक प्राणियों को वश में करने वाले या साँप का खेल दिखाने वाले, काम-वासना के आगे खुद वशीभूत हो जाते हैं, नाचने लगते हैं। वे वीर नहीं हैं, वीर उनको कहा जा रहा है जो भीतर में रहे विकारों पर विजय पाते हैं।

वीर कई होते हैं। शूरवीर होते हैं तो दानवीर भी हैं। सब-कुछ लुटाने वाले, सर्वस्व समर्पण करने वाले भी है। पैसों की, सोने की, चाँदी की, हीरे-जवाहरात की, राज-पाट की बात क्या कही जाय, देने वालों ने अपने प्राण तक अर्पित-समर्पित कर दिए। ऐसे-ऐसे दानवीर भी हुए हैं, जो ढूँढने पर मिल सकते हैं। किन्तु वे कभी-कभी अपनी विपरीत प्रवृत्तियों पर विजय मिलाने वाले, छोटे-से नियम को निभाने में कायर हो जाते हैं। शरीर की थोड़ी-सी वेदना सहन करने में लाचार ही नहीं, ली हुई प्रतिज्ञा को तिलांजलि भी दे देते हैं। ऐसे लोग जब किसी नियम को अंगीकार भी करेंगे तो आगार की छूट रखने की बात करेंगे। शास्त्रकार कह रहे हैं- नियम के पालने में आत्मा को, आत्म-स्वभाव में जिन प्रक्रियाओं से पाया जाता है, उसका प्राण-पण से पालन करना वीरता है। एक व्यक्ति शक्ति सम्पन्न है फिर भी सामान्य से नियम निभाने में कमजोर हो जाता है। वीर वह है जो प्राणों का संकट आ जाने पर, सब-कुछ लुट जाने पर सब-कुछ अर्पण करते हुए भी अपनी ली हुई प्रतिज्ञा के पालन में दृढ़ रहता है। इसलिए नियम लेना, व्रत-पालना और चारित्र का मार्ग वीरों का मार्ग है। वीर कैसे पार होता है? नियम जैसा लिया, उसे उसी प्रकार पालना वीरता की कसौटी पर खरा उतरना है। नहीं तो, लेने के समय अलग विचार था, नियम लेकर पालते समय अलग विचार था, तो समय बीतने के साथ न नियम रहेगा, न नियम लिया है यह विचार मन में आएगा। कुछ लोग नियम तो लेते हैं, नियम पालने की मनःस्थिति में नहीं होते, इसलिए वे नियम में बार-बार परिवर्तन करने की बात कहते हैं। परिवर्तन का आग्रह रखने वाले तो फिर भी नियम को नियम मानते हैं। किन्तु नियम लेकर भूल जायँ उन्हें क्या कहना?

वीरता के पश्चात धीरता की बात है। मारवाड़ी कहावत है - चट रोटी, पट दाल। इधर बोया, उधर फल चाहना। इधर सगाई, उधर विवाह । लोग इतने उतावले हैं कि घी की डली मुँह में रखकर पेट पर हाथ फेरतें हैं कि शरीर में चिकनाहट आई या नहीं। खाने के बाद असर देखने की जिनकी आदत है तो कहना होगा- यहाँ धीरज का दिवाला निकल गया है। कुछ ऐसे लोग हो सकते हैं जो सोचते हैं- इधर दवा ली, उधर रोग गायब। उसे घंटों, दिनों, महिनों का इन्तजार बर्दास्त नहीं होता।

आज हर काम में लोगों को तुरन्त रिजल्ट चाहिए। इस जल्दी-जल्दी में न वीरता है, न धीरता। वीरता के साथ धीरता का गुण होना चाहिए। कभी कोई कष्ट आ जाय, उपसर्ग हो जाय, रोग हो जाय तो धैर्य के बल पर उसे क्षीण किया जा सकता है। उतावलेपन में कष्ट हो या रोग, दुःख हो अथवा शोक, वह दूर तो शायद नहीं होता, अपितु बढ़ सकता है। मैं इसीलिए कह रहा हूँ- जो धीरता रखते हैं वे मीठे फल पाते हैं। उतावलेपन में नुकसान है, धीरता में फायदा।

साधना के क्षेत्र में धीरज चाहिए। आप बोलते हैं, और सुनते हैं कि ''धीरज का फल मीठा होता है।'' किसी काम को व्यवस्थित करना है तो धैर्य चाहिए, शांति चाहिए, एकाग्रता चाहिए और चाहिए विशुद्धता। उतावलेपन से काम बिगड़ता है। आज अधिकांश लोग रोग-निकन्दन में, स्वभाव-परिवर्तन में और प्रकृति के चिन्तन में तत्काल फल की अपेक्षा करते हैं। इससे लाभ कम, हानि अधिक होती है। सुना आपने भी है, सुना मैंने भी है कि अगर खाया हुआ ज्यों का त्यों निकल गया, पचा नहीं तो खाया हुआ, शरीर-पुष्ट करने के बजाय शरीर को कमजोर करेगा। आपने सुना होगा -

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आयाँ फल होय ।।

माली रोज पानी देता है। उसे धीरज है, जल्दी नहीं, इसलिए ऋतु आने पर फल पाता है। जो भी तत्काल फल की अपेक्षा करता है, उसे कुछ नहीं मिलता। व्यक्ति जितना जल्दी धनवान बनता है तो उतना ही जल्दी कंगाल भी बन सकता है। इसलिए वीर के बाद धीर की बात कही जा रही है। धीरता में सहनशीलता समाहित होती है। धीरता कहो या सहनशीलता कहो, व्यक्ति लिए हुए व्रतों का, किए हुए कामों का और प्रारम्भ की गई प्रवृत्तियों का धीरता के साथ संचालन करे तो वह उसके मीठे फल पाता है।

तीसरी बात कही जा रही है- गंभीरता। ज्ञानी, गंभीर होता है। अज्ञानी, उतावला। व्यक्ति ने मशीन की तरह इधर खाया, उधर निकाला तो क्या उसका रस बनेगा ? वीर और धीर के बाद जरूरत है गंभीर होने की। साधना-मार्ग में चारित्र अंगीकार करना, व्रत-ग्रहण करना वीरता है, अंगीकृत चारित्र पर श्रद्धा-विश्वास रखना धीरता है और फिर ज्ञान की गंभीरता है तो लिए व्रत अच्छी तरह पूरे होते हैं, पार लगते हैं। नियम भले ही छोटा है या बड़ा, उसके प्रति दृढ़ता हो तभी नियम की पालना होती है, नियम पार पड़ता है। जरूरत है- व्रत लेने की वीरता हो, पालन में धीरता हो और ज्ञान में गंभीरता हो। तीनों गुणों को संयुक्त करके चलने वाला मंजिल तथा पहुँचता है। वीर-धीर-गंभीर प्रकृति के व्यक्ति साधना में सिद्धि पाते हैं। उनका काम हर क्षेत्र में सफलता तक पहुँचाता है।

चारित्र-मार्ग में हम गुणों का अनुसरण करना चाहें तो आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज का जीवन देख सकते हैं। गुणों के कारण भगवन्त आज तक याद किए जाते हैं, हम उस महापुरुष के गुणगान करते थक नहीं रहे हैं। वे हमारे मार्गदर्शक ही नहीं, हमारे जीवन के लिए ध्रुव-मार्ग में पाथेय बने हुए हैं। जरूरत है- हम व्रत-नियम लें, संकल्प के साथ आगे बढ़े।

संकल्प, संकल्प होता है। वह न बड़ा होता है, न छोटा। छोटा संकल्प भी वीरता के साथ लिया जाए, धीरता के साथ पाला जाए और गंभीरता के साथ नियम पर चला जाय, तो नियम पार उतार सकता है। एक नियम लिया- गीली लकड़ी नहीं काटूँगा। इतना-सा नियम, पर उसकी शुद्ध पालना की तो उस नियम से एकाभवतारी बना जा सकता है। एक छोटा-सा नियम ''पूनम के दिन ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा।'' इस नियम का परिपालन करने से कितना लाभ हुआ, आपने पहले कई बार सुना है। एक नियम किया- ''जाल में आई पहली मछली को छोड़ दूँगा।'' ये बहुत सामान्य नियम हैं। नियम सहज पाले जा सकते हैं। बस, नियम पालें और विचारों की गंभीरता बनाए रखें तो छोटा नियम भी एकाभवतारी बना सकता है, मोक्ष तक पहुँचा जा सकता है। आप हम वीर-धीर-गंभीर बनकर चलेंगे तो सुख-शांति-आनन्द पा सकेंगे। ●

चातुर्मास एक Semester है

- चातुर्मास एक Semester है ।
- आगम हमारा Syllabus है ।
- जिनवाणी हमारी Study है ।
- साधु-संत हमारे Teacher है ।
- धर्मसभा हमारी Class है ।
- श्रावक हमारे Classmate है ।
- नवतत्व हमारे Lesson है ।
- सेवा हमारे Practicals है ।
- आचरण हमारी Exam है ।
- परमात्मा हमारे Examiner है ।
- कर्म हमारे Percentage है ।
- गति हमारा Result है ।
- दुनिया में ज्ञान-विज्ञान की यह सबसे बेहतर University है । ●

पर्युषण पर्व - क्षमा पर्व

जैन जागृति - सप्टेंबर २०२४- पर्युषण अंक

जैन धर्मात ''पर्युषण पर्व'' सर्वांत महत्त्वाचा उत्सव पर्व आहे. या काळात समाज बांधव जास्तीत जास्त धर्म आराधना करतात. संवत्सरीच्या वेळी व्यक्ति, समाज व संपुर्ण जीव जगताला क्षमा देतो व क्षमा घेतो.

जैन जागृतित क्षमापनाची जाहिरात देऊन आपण जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचा. जैन जागृतित जाहिरात देऊन जैन समाजाशी संवाद साधा.

सप्टेंबर २०२४ - पर्युषण अंकासाठी २० ऑगस्ट २०२४ पर्यंत जाहिरात पाठवा.

आर्ट पेपर वर रंगीत (Colour) जाहिरात	
पूर्ण पान	रु. ९०००/-*
१/२ पान	रु. ४७००/-*
* डिझाईन खर्च वेगळा - रु. ५००/-	
GST - 5% Extra.	

व्हाईट पेपरवर एका रंगात (Black & White) जाहिरात	
पूर्ण पान	रु. ४२००/-
१/२ पान	रु. २५००/-
१/४ पान	रु. १४००/-
१/८ पान	रु. ९००/-

आजच्या स्पर्धेच्या युगात जाहिरात ही अत्यावश्यक बाब झाली आहे. जैन समाजात ''जैन जागृति'' हे सर्वांत प्रभावी माध्यम आहे. आपल्या व्यवसायाची जाहिरात ''जैन जागृति'' मध्ये द्या. - संपादक

E-mail - jainjagruti1969@gmail.com www.jainjagruti.in

श्री रावण पार्श्वनाथ तीर्थ (अलवर, राजस्थान)

तीर्थाधिराज ❊ श्री रावण पार्श्वनाथ भगवान, प्राचीन परिकरयुक्त श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ३५ सें. मी. प्रतिमा मात्र (श्वे. मन्दिर)।

तीर्थ स्थल ❊ अलवर शहर के बीरबल मोहल्ले में।

प्राचीनता ❊ यहाँ की प्राचीनता बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान के समय की मानी जाती है।

लंकापति श्री रावण व मंदोदरी द्वारा अपनी सेवा-पूजा हेतु कई बार कई जगहों पर जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा बनाकर पूजा करने का उल्लेख कई जगह आता है।

यहाँ पर भी एक उल्लेखानुसार कहा जाता है कि श्री रावण व मंदोदरी विमान द्वारा कहीं जा रहे थे। रास्ते में अलवर के निकट विश्राम हेतु ठहरे। भोजन के पूर्व पूजा करना उनका नियम था। संयोगवश प्रभु प्रतिमाजी साथ लाना भूल गये थे अतः मंदोदरी ने यहीं पर बालु से प्रतिमा बनाकर भक्तिभाव से पूजा की थी वही प्रतिमा श्री रावण पार्श्वनाथ नाम से विख्यात हुई जो यहाँ विद्यमान है। इसी कारण यह तीर्थ श्री रावण पार्श्वनाथ के नाम विख्यात हुवा।

विक्रम सं. १४४९ में यहाँ पर श्री रावण पार्श्वनाथ मन्दिर रहने का उल्लेख है। तत्पश्चात् भी अलग-अलग तीर्थ मालाओं में यहाँ के श्री रावण पार्श्वनाथ मन्दिर का उल्लेख आता है। इनसे यहाँ की प्राचीनता सिद्ध होती है।

वि. सं. १६४५ में मन्दिर का पुनः निर्माण करवाकर श्री रावण पार्श्वनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाने का उल्लेख है। जो अभी विद्यमान है।

यहाँ से लगभग ४ कि. मी. दूर एक जैन मन्दिर खण्डहर अवस्था में अभी भी विद्यमान है उसे रावण

देहरा (श्री रावण पार्श्वनाथ जैन मन्दिर) कहते हैं। संभवतः किसी राजकीय, धार्मिक या सामाजिक कारण से स्थान का परिवर्तन करना आवश्यक हो गया हो।

कुछ भी हो उक्त वर्णणों से इस तीर्थ की प्राचीनता सिद्ध होती है।

विशिष्टता ❊ यह तीर्थ स्थल प्राचीन होने के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल भी है, जहाँ पर जिनेश्वर भगवान के परम भक्त अतीव श्रद्धावान आगामी चौवीसी में तीर्थंकर पद प्राप्त करनेवाले लंकापति श्री रावण व मंदोदरी द्वारा श्री पार्श्वप्रभु की अलौकिक प्रतिमा यहाँ निर्मित हुई व मन्दिर में प्रतिष्ठित होकर भी रावण पार्श्वनाथ के नाम तीर्थ विख्यात हुवा।

अन्य मन्दिर ❊ वर्तमान में इसके अतिरिक्त एक मन्दिर व एक दादावाड़ी हैं।

कला और सौन्दर्य ❊ मन्दिर में विराजित श्री रावण पार्श्वनाथ भगवान के सिवाय अन्य प्राचीन प्रतिमाऐं भी कलात्मक, भावात्मक व दर्शनीय है।

उक्त उल्लेखित निकट के प्राचीन मन्दिर के खण्डहर अवशेषों की कला भी दर्शनीय है।

मार्ग दर्शन ❊ यहाँ का अलवर रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड मन्दिर से लगभग १/२ कि. मी. दूर है, मन्दिर तक बस व कार जा सकती है। शहर में सभी तरह की सवारी का साधन है।

यहाँ से जयपुर १५१ कि. मी. दिल्ली १६५ कि. मी. मथुरा ११० कि. मी. व भरतपुर लगभग ११० कि. मी. दूर है। इन सभी स्थानों से बस, रेल्वे व टेक्सी का साधन है।

नजदीक के हवाई अड्डे दिल्ली, जयपुर व आगरा हैं।

सुविधाएँ ❊ ठहरने के लिए मन्दिर के निकट ही बीरबल मोहल्ले में जैन धर्मशाला है । आधुनिक ऐसी धर्मशाला भी है ।

पेढ़ी ❊ श्री रावण पार्श्वनाथ जैन श्वे. मन्दिर मूर्तिपूजक मन्दिर ट्रस्ट, बीरबल का मोहल्ला।

पोस्ट : अलवर - ३०१ ००१. (राजस्थान),
मो. : ९४१४०१६८२२
(साभार : श्री जैन प्रार्थना मन्दिर ट्रस्ट, चेन्नई
तीर्थ दर्शन - द्वितीय खंड) ●

छोटी सी बातें

भारत गौरव आचार्य श्री पुलक सागरजी म.सा.

❊ धन के खजाने से किसी को धन-दौलत या माया न दे सको तो कोई बात नहीं, पर अपने मन खजाने से दुआएँ लुटाते रहना ।

❊ विद्वान आदमी अपने आप को मूर्ख कहता है । मूर्ख आदमी अपने आप को विद्वान कहता है ।

❊ जिस प्रभात में प्रभु का स्मरण हो जाये, वह प्रभात सुप्रभात हो जाती है, जिस रात में प्रभु का ध्यान हो जाये, वह रात शुभ रात हो जाती है ।

❊ स्वाद मिर्च मसालों में नहीं, भीतर के प्रेम में होता है, तभी तो मुनियों का उबला भोजन भी बड़ा स्वादिष्ट होता है।

❊ जोड़ लों चाहे कितने भी हीरे-मोती, मगर ये याद रखना, कफन में जेब नहीं होती ।

कव्हर तपशील - ऑगस्ट २०२४

❖ **श्री रावण पार्श्वनाथ तीर्थ, अलवर**

अलवर, राजस्थान येथील श्री रावण पार्श्वनाथ तीर्थ च्या माहितीचा लेख पान नं. २३ वर दिला आहे.

❖ **श्री गोडीजी पार्श्वनाथ जैन मंदिर, पुणे**

श्री गोडीजी पार्श्वनाथ जैन मंदिर, गुरुवार पेठ, पुणे येथे मुनिराज श्री पुण्यध्यान विजयजी म.सा. आदि ठाणा यांचा चातुर्मास संपन्न होत आहे.

❖ **आदिनाथ सोसायटी, पुणे**

श्री आदिनाथ जैन स्थानक, पुणे येथे प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनिजी म.सा., श्री दर्शनमुनिजी म.सा., श्री अभिनंदन मुनिजी म.सा. यांचा चातुर्मास संपन्न होत आहे.

❖ **दादावाडी टेम्पल ट्रस्ट, पुणे**

श्री जैन श्वेतांबर दादावाडी टेम्पल ट्रस्ट, सारसबाग, पुणे येथे मुनिराज डॉ. श्री लाभेशविजयजी व श्री ललितेश विजयजी म.सा. यांचा चातुर्मास संपन्न होत आहे.

❖ **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे**

महावीर प्रतिष्ठान, सॅलिसबरी पार्क, पुणे येथे महाराष्ट्र गौरव प.पू.श्री गौतममुनिजी म.सा. श्री चेतनमुनिजी म.सा. यांचा चातुर्मास संपन्न होत आहे. गुरुपौर्णिमा दिवशी श्री. विजयकांतजी कोठारी व सज्जनबाई बोथरा यांचा विशेष सन्मान करण्यात आला.

❖ **जैन श्रावक संघ, बिबवेवाडी, पुणे**

श्री वर्धमान श्वेतांबर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बिबवेवाडी, पुणे येथे साध्वीश्री पुष्पचुलाजी आदि ठाणा ५ यांचा चातुर्मास संपन्न होत आहे.

❖ **आर.एम.डी. स्कूल, पुणे**

आर.एम.डी. स्कूल पुणे येथे वृक्षारोपण करताना आर.एम.डी. फाऊंडेशनच्या उपाध्यक्षा शोभाताई आर. धारीवाल, विश्वस्त श्री. पोपटशेठ ओस्तवाल इ. (बातमी पान नं. ८५)

❖ **सुर्यदत्त एक्सलन्स ॲवॉर्ड – २०२४**

सुर्यदत्त एज्युकेशन फाऊंडेशन व लोकमतच्या वतीने सुर्यदत्त एक्सलन्स ॲवॉर्ड २०२४ नाशिक येथे संपन्न झाला. (बातमी पान नं. ८३)

❖ **श्री. चांदमलजी लुंकड, पुणे**

भोसरी, पुणे येथील श्री. चांदमलजी सोभाचंदजी लुंकड यांना प्रियदर्शनी ग्रुप ऑफ स्कूल तर्फे जीवन गौरव पुरस्कार देऊन सन्मानीत करण्यात आले. (बातमी पान नं. ८९) •

जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा
सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत रिजनेबल मार्ग...
जैन जागृति – आजच जाहिराती व वर्गणी साठी संपर्क करा.
मो. : ९८२२०८६९९७, ८२६२०५६४८०